JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मॉरीशस के हिंदी कथा साहित्य में गांधी

डॉ॰ उमेश कुमार सिंह, एसोशिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, वर्धा-442001, [महाराष्ट्र] भारत
ई-मेल: umesh_jnu@rediffmail.com दूरभाष: +919423307797

सारांश: मॉरीशस देश में भारत से उन्नीसवीं शताब्दी में विश्व का सबसे बड़ा विस्थापन हुआ था, जिसमें 4.50 लाख भारतीय लोग अपनी आजीविका की तलाश में मॉरीशस में विस्थापित हुए थे किन्तु भारत से उत्तर भारतीयों का पहला जत्था अनुबंध मजदूर के रूप में 1834 में मॉरीशस आया था जिनमें रामदेव धुरंदर के दादाजी भी आए थे। (संदर्भ: रामदेव धुरंधर साक्षात्कार)। इसके बाद भारत के कई राज्यों से मजदूर लोगों को गन्ने के खेतों में काम करने के लिए गिरमिटिया शर्तबंद मजदूर के अंतर्गत लाया गया था, जिनमें भोजपुरी बोलने वाले मजदूरों की संख्या अधिक थी। इस कारण मॉरीशस पूरी तरह भोजपुरी मय हो गया था। आज मॉरीशस द्वीप को दुनियाँ के पैराडाइज़ के रूप में भी जाना जाता है। इस देश में भारतीय मूल के भारतवंशियों की पाँचवीं और छठी पीढ़ी निवास कर रही है। इस देश के पवासी गिरमिटिया लोग 1968 तक अर्थात स्वतंत्र होने से पूर्व तक भारत का राष्ट्रीय गान जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता बड़े सोहार्द्र और प्रेम के साथ सस्वर गा कर गर्व का अनुभव किया करते थे। आज मॉरीशस को लघु भारत के नाम से भी जाना जाता है भारत के लिए मॉरीशस देश को सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण एवं प्रजातांत्रिक देश कहा जा सकता है। मॉरीशस में 29 अक्तूबर 1901 में मोहनदास करमचंद गांधी डरबन से लौटते समय नौशेरी नामक जहाज से आए थे तथा वे पोर्ट लुईस में बन्दरगाह के निकट 21 दिन तक रुके एवं मॉरीशस के प्रवासी भारतीयों को संबोधित किया था।

प्रमुख शब्द / Key Words: गिरमिटिया Indentured सक्रिय राजनीति Active Politics पैराडाइज़ Paradise गोरे मालिक Gore Boss गिरमिटिया मजदूर Indentured Labour बहु-विधि Multiple Method

शोध प्रविधि / Research Methodology:

मोहनदास करमचंद गांधी जब सन 1924 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के (नेशनल कॉंग्रेस) अध्यक्ष थे, उस समय गांधी जी गिरमिटिया मजदूर कानून के संबंध में मॉरीशस आए थे। किन्तु जब भारत और मॉरीशस में वर्ष 2019 में महात्मा गांधी की 150 वीं जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर विषेश रूप से इस बात का जिक्र किया गया था कि महात्मा गांधी ने 21 दिन का दौरा अक्तूबर 1901 में मॉरीशस में किया था किन्तु मॉरीशस के

साहित्यकारों की एक अलग ही धारणा है मोहनदास करमचंद गांधी जी जब एस एस नोशेरा नामक पानी के जहाज से इंग्लेंड से अफ़्रीका के दौरे पर जा रहे थे। उस दौरे के बीच में वे मॉरीशस में 21 दिन तक रुके थे। इतिहास इसका गवाह है कि गांधीजी ने मॉरीशस में रह रहे भारतवंशियों को संबोधित किया थे उनके अनुसार उन्होने मॉरीशस के भारतीय मजदूर रह-वासियों को कुछ महत्वपूर्ण बातें बतलाई से थीं। **जिनमें प्रथम बात अपने बच्चों को उचित शिक्षा दिलवाना तथा दूसरी बात देश की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेना। उनकी इन बातों का समावेश अभिमन्यु अनत से अपने उपन्यास गांधीजी बोले थे में किया गया है** किन्तु अभिमन्यु अनत ने अपने लाल पसीना” उपन्यास की तरह गांधी जी बोले थे उपन्यास की भूमिका में भी इस उपन्यास के इतिहास होने क दावा नहीं किया है किन्तु मॉरीशस में महात्मा गांधी के दौरे की तिथियाँ इतिहास से मेल नहीं खाती हैं।

इस शोध पत्र में अभिमन्यु अनत द्वारा लिखित गांधी जी बोले थे उपन्यास के कथानक और उसके चरित्रों के माध्यम से गांधीजी की मॉरीशस में उपस्थिति तथा उनके विचारों के द्वारा मॉरीशस में आई चेतना के संबंध में विचार किया जा रहा है। इस संदर्भ में यह बताना आवश्यक हो जाता है कि अभिमन्यु अनत को उनके श्रेष्ठ लेखन के कारण मॉरीशस में उन्हें मॉरीशस के प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है अभी हाल ही में पिछले वर्ष उनका सन 2018 में निधन हो गया।

“गांधीजी बोले थे उपन्यास मॉरीशस के दिवंगत प्रवासी लेखक अभिमन्यु अनत द्वारा लिखा गया एक विदेशी रचनाकार का हिंदी में लिखित उपन्यास है। इस उपन्यास की कहानी को कुल तीन खंडों में विभक्त किया गया है। प्रथम खंड की कहानी को पृष्ठ 9-102 तक सात उप-भागों में विभक्त किया गया है, दूसरे खंड की कहानी पृष्ठ 105-181 में तथा सात भागों में विभक्त किया गया है और तृतीय खंड की कहानी को पृष्ठ 105-181 में कुल पाँच भागों में विभक्त करके इसकी कहानी को पूर्णता प्रदान की गई है। आज विश्व प्रसिद्ध लाल पसीना और उसकी अगली कड़ी के रूप में गांधी जी बोले थे उपन्यास उनकी बहुत सशक्त रचना कही जा सकती हैं जिस पर हम इस शोध पत्र में विचार कर रहे हैं। गांधी जी के भाषणों से इस द्वीप की जनता में एक नई ज्योति प्रज्ज्वलित ही नहीं हुई अपितु वहाँ के गिरमिटिया भारतीय मजदूरों में एक नवीन ऊर्जा का संचरण भी हुआ।

इस उपन्यास की कथा संक्षेप में कथा के प्रथम भाग में देवराज सामूहिक फांसी से विक्षुब्ध होकर मजदूर रक्षक तथा बस्ती वालों को सूचित कर देता है। इससे वह गोरे मालिक की आँख का काँटा बन जाता है तथा मालिक के भाड़े के लोग देवराज को अकेले में पाकर घेरकर मारने का प्रयत्न करते हैं जिनमें से दो को अकेले ही देवराज जान से मार देता है और मदन के घर में छिप जाता है। इसके बाद सुबह तड़के पुलिस के सिपाही मदन के घर को घेर लेते हैं। देवराज वहाँ से भागने में सफल तो हो जाता है किन्तु पुलिस वाले और उनके कुत्ते उसका पीछा करते हैं, वह बस्ती में वापस लौट आता है और पुलिस की गोली से उसकी मौत हो जाती है। इसके बाद कहानी का सबसे हृदय विदारक दृश्य के रूप में देवराज के शव को कुत्ते नोच- नोच कर खाते हैं। इस दृश्य को देखकर ग्यारह वर्ष का परकाश का बालक घबड़ाने के कारण बीमार पड़ जाता है। बस्ती वाले उसे डॉ साकीर के यहाँ पोर्ट लुईस ले जाते हैं। डॉ साकीर से उन्हें गांधी जी के आगमन की सूचना प्राप्त होती है। दूधवाले चिन्नासामी से बस्ती वालों को सूचना मिलती है कि गांधीजी का स्वागत ताहेर बाग में हुआ है और वे रामपुर जाने वाले हैं। बस्ती के तीस व्यक्ति रामपुर की सभा में जाते हैं जिसमें बालक परकाश भी जाता है। अपने भाषण में गांधीजी लोगों को अपने बच्चों को उचित शिक्षा देने तथा राजनीति में भाग लेने की बात कहते हैं। इस बात को फलीभूत करने के लिए परकाश को प्रेमसिंह के साथ पढ़ने के लिए भेज देता है और प्रेम सिंह बस्ती के बीस बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिलवाता है।

दूसरे भाग में परकाश सरकारी स्कूल में अध्यापक बन जाता है किन्तु वह उस नौकरी में चार महीने से अधिक ठहर नहीं पाता है क्योंकि तीन ओर से पहाड़ियों वाले गाँव में एक आदमी का कत्ल कर दिया जाता है। इस मामले में परकाश आगे आकर गन्ने के खेतों में काम करने वाले मजदूरों का एक संघ बनाता है। उसके बाद

उस पर गहने चोरी करने और हथियार रखने की साजिश का आरोप लगाया जाता है किन्तु बुधन वकील की सहायता से निरपराध सिद्ध होकर छूट जाता है।

तीसरे भाग में परकाश की शादी सीमा से हो जाती है और उसका मजदूर संघ मजबूत होता है। मजदूरों के बीच फूट डालने के उद्देश्य से किराए के आदमी बिना बात के सवाना कोठी में हड़ताल करवा देते हैं। इस कारण श्रमिक संघ लीडर घनेश्वर एवं अन्य मिलकर तीन मजदूरों के सामान को कोठी के घरों से निकालकर बाहर फेंक देते हैं। परकाश वहाँ आकार हड़ताल करवा देता है तथा इसी समय देश में सर कुँवर महाराज सिंह के आगमन की सूचना मिलती है। गोरे मालिकों को दबना पड़ता है। गोरे मालिक परकाश के कामों को नाकाम करने के उद्देश्य से परकाश को ऊंचा पद देकर उसे खरीदना चाहते हैं किन्तु परकास ने कभी बदलना नहीं सीखा है फिर भी गोरे मालिक मजदूरों के वेतन में कुछ वृद्धि कर देते हैं और चारों मजदूरों का सामान उनके घरों में वापस लौटा देते हैं। इसी बीच भूख हड़ताल समाप्त हो जाती है। अंत में परकाश अपने मजदूर संघ को मजदूर दल बना देता है। इस कथानक में मदन, मीरा और सुगूनवा और अनुराधा की प्रेमकथाओं का वर्णन भी हुआ है। इस उपन्यास में सुगूनवा और अनुराधा की प्रेम कथा एक अंतर्कथा भी है। इस उपन्यास का अंत कुँवर महाराज सिंह के भारत लौटने पर होता है।

मॉरीशस के उस दौर में गिरमिटिया मजदूर बहुत गरीबी में अपना जीवन यापन किया करते थे, उसकी झलक गांधीजी बोले थे उपन्यास में इस उदाहरण में देखने को मिलती है जैसे उसने बगल में तख्ते से टटोलकर टीन के चिराग को अपने पास किया। बिस्तर के नीचे से चकमक को बाहर निकाला। अग्नि पत्थर को लोहे के टुकड़े से रगड़कर सन के सूखे हुये गूदे पर चिंगारियाँ पैदा कीं और फिर उन्हें फूककर चिराग जलाया। 1 पृष्ठ 79 उनकी आर्थिक स्थिति में विस्थापन के बावजूद विशेष अंतर नहीं पड़ा था।

इस देश में इसी प्रकार गोरे मालिकों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का बहु-विधि प्रकार से शोषण किया जाता रहा है दो कुत्तों ने उस दिन दोनों के कपड़ों को तार-तार करके उन्हें लहूलुहान कर दिया। सीता के आँचल में सिमटा हुआ परकाश उन खूंख्वार कुत्तों को देखना नहीं चाह रहा था।2 जब तीन खूंखवार कुत्ते उस पर झपट पड़े। तीन कुत्तों ने उसे दबोचकर नोचना शुरू कर दिया। इस हादसे के बाद परकास बहुत बीमार पड़ जाता है। 3 पृष्ठ 19 डॉ साकीर जुम्मे के दिन 12 बजे के बाद सभी का मुफ्त इलाज करता है 4 भारतीय मजदूरों के साथ पशुवत व्यवहार किया जाता था तथा विद्रोह करने पर उन पर भारी जुल्म किए जाते थे जैसे- अब तो कोठीवालों को जिन मजदूरों में विद्रोह की चिनगारी नजर आ जाती है उन्हें चुपके से पेड़ों पर झुला दिया जाता है, ताकि कल कोई भी आवाज उठानेवाला न रहे। जिंदगी सिर्फ उन्हीं को बक्शी जाएगी जो जुल्मों को चुपचाप सहने को तैयार होंगे।5 पृष्ठ 12 भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण की बात लाल पसीना, गांधी जी बोले थे, और पसीना बहता रहा आदि सभी उपन्यासों में व्यक्त की गई है। गांधीजी बोले थे उपन्यास में गांधी जी के विचारों का असर लोगों पर होता है।

लाल पसीना उपन्यास में सभी जहाजिया भाई हुआ करते थे, उसमें जाति और धर्म किसी प्रकार से मानवता और मानवीय सम्बन्धों के मध्य में नहीं आते थे। इस उपन्यास में बांटते हुये दिखलाई पड़ते हैं जैसे- कल तक हम एक सभा में बैठने वाली, एक मंदिर में जाने वाली एक जाति के थे। आज हमें चार जातियों में बांटा जा रहा है। इससे पहले हिन्दू और मुसलमान तक में कोई अंतर नहीं था। सब मजदूर थे। एक दूसरे के सुख-दुख में हिस्सेदार थे। अब तो अलग-अलग बंटे जा रहे हैं। ... ब्राह्मण अपना कुनबा बनाकर बैठा है। ठाकुर अपना। वैश अपना, चमार अपना, दुसाध अपना और अब तो मराठी, तेलगू, तमिल भी अपने अलग-अलग कुनबे बनाने लगे हैं। अब न मजदूरों की एक जाति रही और न भारतीयों की।6 पृष्ठ 131, भारतीय गिरमिटिया मजदूरों में विभाजन के स्थान पर एकता स्थापित करने के लिए गांधीजी के विचार प्रेरणा का आधार प्रतिविम्बित एवं परिलक्षित होते दिखलाई पड़ते हैं।

अभिमन्यु अनत ने अपने लाल पसीना” उपन्यास की तरह गांधी जी बोले थे उपन्यास में भी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण को बखूबी व्यक्त किया है किन्तु मॉरीशस में ठहरकर इस शोषण से मुक्ति के लिए गांधी जी ने क्या संदेश दिया और उसकी प्रतिक्रिया में इस द्वीप के लोगों के क्या किया यही गांधी जी बोले थे उपन्यास की उर्वर जमीन कही जा सकती है।

लाल पसीना उपन्यास की कहानी उनके अपनों के द्वारा सुनाया गया यथार्थवादी चित्रण होने से इनकार नहीं किया जा सकता है और गांधी जी बोले थे की कहानी लाल पसीना उपन्यास के युवा हो रहे चरित्रों के माध्यम से गढ़ी गई हैं। लाल पसीना के जीवित बचे हुये पात्र “गांधीजी बोले उपन्यास के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। किसन सिंह का पुत्र मदन, दाऊद और ज़ीनत और उनका पुत्र फरीद, मीरा, विवेक की पत्नी सीता और देवराज जो उपन्यास के प्रारम्भ में ही पुलिस द्वारा मार दिया जाता है आदि सभी लाल पसीना के पात्र हैं। इसमें जो पात्र युवावस्था में थे वे सभी गांधी जी बोले थे उपन्यास में अधिक अनुभवी, प्रौढ़ व्यक्तियों के रूप में उपस्थित होते हैं। लाल पसीना का मदन नेत्रहीन होने के स्थान पर इसमें विकलांग होता है तथा वह दृढ़प्रतिज्ञ और कर्तव्यनिष्ठ दिखलाई पड़ता है।

इतिहास के प्रसिद्ध नाम और उनके कार्य कलापों आदि को भी इस उपन्यास में सम्मिलित किया गया है युवक मोहन दास करमचंद गांधी (बाद में गांधी), डॉक्टर साकिर, मणिलाल डॉक्टर, वकील बुधन, काशीनाथ क्रस्तू और कुँवर महाराज सिंह आदि। इतना ही नहीं इस उपन्यास की कई घटनाएँ ऐतिहासिक ठहरती हैं। इस प्रकार गांधी जी बोले थे उपन्यास गांधीजी के विचारों के प्रभाव गिरमिटिया भारतीय कुलियों पर परिलक्षित ही नहीं होता है बल्कि इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में रखना किसी प्रकार अनुचित नहीं कहा जा सकता है।

इस उपन्यास में बस्ती के निवासियों के सुख-दुख, आशा-निराशा, संयोग वियोग के बीच सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नति अवनति के साथ गोरे मालिकों की यातना और शोषण के विरोध में उत्साह के साथ संघर्ष करते रहने और उद्धार के प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर होने की कहानी कही जा सकती है। गांधी जी बोले थे उपन्यास की कथा के लिए सबसे बड़ी घटना मोहनदास करमचंद गांधी के मॉरीशस आने को माना जा सकता है। गांधीजी के विचारों की ऊर्जा मदन और उनके साथियों के लिए आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होती है तथा इसके फलस्वरूप ही परकाश शिक्षा प्राप्त करके अध्यापक बन जाता है और बाद में मजदूरों का नेता बन जाता है। बस्ती में स्कूल खोलने की व्यवस्था गांधी के संदेश सुनने के बाद होता है। मनीलाल डॉक्टर भी गांधी जी के द्वारा ही भेजे जाते हैं। अंत में कुँवर महाराज सिंह का आगमन बहुत उत्तम हुआ है। इस उपन्यास का अंत कुँवर महाराज सिंह के भारत लौटने के साथ होता है। उपन्यास लिखने के पीछे उद्देश्य यह बताना है कि मॉरीशस के भारत वंशियोंशियों की उन्नति के पीछे भारत के महापुरुषों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

निष्कर्ष:- गांधीजी बोले थे उपन्यास पूरी तरह से गांधी विचार और भारतीयता का चित्र प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास का नायक संघर्ष का प्रतीक बनाकर गांधी विचारधारा को आत्मसात करता है। आज से लगभग सत्तर से अस्सी वर्ष पहले मॉरीशसीय समाज में भारतीयों की जो स्थिति थी, उसमें भयंकर गरीबी और गोरों के बीच मध्यस्तता करने वाले सरदार और गोरे सत्ताधीशों से उनका दोहरा संघर्ष था। यहाँ उसे समग्रता में महसूस किया जा सकता है। मदन, परकाश, सीता, मीरा आदि इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं किन्तु उनके विचार, संकल्प, श्रम, त्याग और प्रेम संबंध उच्च मानवीय आदर्शों की स्थापना करते हैं और जो किसी भी संकरमणशील जाति के प्रेरणाश्रोत हो सकते हैं। गांधी विचार के मूल आधार स्तम्भ सत्य और अहिंसा, सर्वोदय सत्याग्रह एवं

रामराज्य तीन आदर्श थे। इस आदर्शों की स्थापना अभिमन्यु अनत ने अपनी कृति गांधी जी बोले थे में पूरी तरह से की है।

संदर्भ:

1. अभिमन्यु अनत, गांधी जी बोले थे, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 1984
2. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02 पृष्ठ 79(1)
3. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 19 (2)
4. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 23 (3)
5. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 39 (4)
6. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 12 (5)
7. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 131 (6)
8. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 1984
9. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, प्रभात प्रकाशन, 2/11, आसफ आली रोड, न्यू दिल्ली 110002 प्रथन संस्करण वर्ष 2004
10. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 2008
11. प्रहलाद रामशरण, रंसगरन मॉरीशस भारतीय संस्कृति का हरावल दस्ता,
12. पं. आत्माराम विश्वनाथ, मॉरीशस का इतिहास, सं प्रह्लाद रामशरण, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 प्रथम संस्करण वर्ष-1923, द्वातीय वर्ष-1998
13. डॉ. उदय नारायण गंगू, मॉरीशस की संस्कृति और साहित्य, यश पब्लिकेशन्स, 1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032, वर्ष 2017
14. डॉ मुनीशवरलाल चिंतामणि, मॉरीशसीय हिन्दी साहित्य, एक परिचय, हिन्दी बूक सेंटर, 4/5-बी, नई दिल्ली-110002, संस्करण वर्ष-2001
15. डॉ. इन्द्रदेव भोला, इन्द्रनाथ, मॉरीशस हिन्दी लेखक संघ का इतिहास(1961-2017) स्टार पब्लिकेशन, प्रा. लि.4/5-बी, आसफअली रोड, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 2017